इतनी बात कह कर चूड़ामन तोता बोला महाराज! ऐसे गुनाहों की पूरी नारियां होती हैं. राजा ने उस रंडी का मुंह काला करवा, सिर मुंडवा, गधे पर चढ़वा, नगरी के फेरे दिलवा, कुड़वा दिया; उस चोर और साहूकार बचे को बीड़े दे रुख़सत किया.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा! इन दोनों में से किसे ज़ियादः पाप हुआ. तब राजा बीर बिक्रमाजीत बोला कि स्त्री को. फिर बैताल बोला कि किस तरह से? यह सुन के राजा ने कहा मर्द कैसाही दुष्ट क्यों न हो, पर उसे धर्म अधर्म का बिचार रहता है. और स्त्री को धर्म अधर्म का कुछ ध्यान नहीं रहता. इसे नारीको बहुत पाप हुआ. यह बात सुनके बैताल फिर चला गया; और उसी दरख़्त पर जा लटका. फिर राजा जा, उसको पेड़ से उतार, गठड़ी बांध कंधे पर रख ले चला.

पांचवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! उज्जैन(१) नाम एक नगरी है. और वहां का राजा महाबल. और उसका हरिदास नाम एक दूत था. उस दूत की बेटी का नाम महादेवी. वह अति सुंदरी थी. जब वह बरयोग हुई तो उसके पिता को चिन्ता हुई, कि इसका बर ढूंढ बिवाह कर दिया

(१) उज्जयिनी.

चाहिये. गरज़, एक दिन उस लड़की ने अपने बाप से कहा कि पिता! जो सब गुण जानता हो मुझे उसे दो जो. तब उसने कहा कि जो सब इलम से वाक़िफ़ होगा तेरी शादी मैं उसके साथ कर दूंगा.

फिर एक दिन उस राजा ने हरिदास को बुलाकर कहा, कि दक्षिण दिसा में हरिचंद(१) नाम राजा है; उसके पास तुम जाकर मेरी तरफ़ से छेम कुशल पुछो; और उन की छेम कुशल के समाचार ले आओ. यह राजा की आज्ञा पाय, बिदा हो, उस राजाके पास, कितने एक दिनों में, जा पहुंचा; और उससे अपने राजा का सब संदेसा कहा; और हमेशः उस राजा के निकट रहने लगा.

गरज़, एक दिन की बात है, कि उस राजा ने इस से पूछा ऐ हरिदास! अभी कलयुग(२) का आरंभ हुआ कि नहीं? तब उन्ने हाथ जोड़कर कहा महाराज! कलिकाल बर्तमान है; क्योंकि संसार में झूठ बढ़ा है, और सत घट गया; लोग मुंह पर बात मीठी कहते हैं, और पेट में कपट रखते हैं; धर्म जाता रहा, पाप बढ़ा; पृथ्वी फल कम देने लगी; राजा डांड़ लेने लगे; ब्राह्मण लालची हुए; स्त्रियों ने लाज छोड़ दी; बेटा बाप की आज्ञा नहीं मानता; भाई भाई का इअ़तिबार नहीं करता; मित्रों से मिचाई जाती रही; ख़ाबिंदों से वफ़ा उठ गई; सेवकों ने सेवा छोड़ दी; और जितनी नालायक़ बातें थीं वे सब नज़र आती हैं.

(१) हरिचन्द्र. (२) कलियुग.

जब राजा से यह सब कह चुका, तब राजा उठकर महल में गया. और यह अपने स्थान पर आन के बैठा; कि इतने में एक बह्मनेटा उसके पास आ कहने लगा कि मैं तुझ से कुछ मांगने आया हूं. यह सुन के उन्ने कहा मांग क्या मांगता है? उन्ने कहा कि अपनी बेटी मुझको दे. हरिदास बोला जिस में सब गुण होंगे, मैं उस को दूंगा. यह सुन के वह बोला कि मैं सब बिद्या जानता हूं. फिर उसने कहा कुछ अपनी बिद्या मुझे दिखला, तो मैं जानूं, कि तुझे बिद्या आती है. तब उस बह्मनेटे ने कहा मैंने एक रथ बनाया है, उसमें यह सामर्थ है कि जहां जाने का इरादः करो, तहां वह एक छिन में ले पहुंचावे. तब हरिदास ने कहा उस रथको फ़जर के वक़्त मेरे पास ले आइयो.

ग़रज़, वह भोरको रथ ले हरिदास पास आया. फिर ये दोनों रथ पर सवार हो उज्जैन नगरी में आन पहुंचे. पर यहां, इत्तिफ़ाक़न, उसके आने से पहले, किसी और ब्राह्मण के लड़के ने उस के बड़े बेटे से आकर कहा था कि तू अपनी बहन मुझे दे. और उसने भी कहा था कि जो सब बिद्या जानता होगा उस को दूंगा; और उस ब्राह्मण के पुत्र ने भी कहा था कि मैं सब ज्ञान बिद्या जानता हूं. यह सुन के उस ने कहा था कि तुझे ही देंगे. एक और ब्राह्मण के पुत्र ने उस लड़की की मा से कहा था कि तू अपनी बेटी हमें दे. उसने भी उसे यही जवाब दिया था कि जो सब बिद्या जानता होगा, उसी को अपनी लड़की दूंगी.

उस ब्राह्मण के लड़के ने भी कहा था कि मैं संपूर्ण शस्त्र बिद्या जानता हूं; और शब्दबेधी तीर मारता हूं. यह सुन के उन्ने भी कहा था कि मैंने क़बूल किया तुझेही दूंगी.

ग़रज़, इसी तरह से तीनों बर आन के इकठे हुए. हरिदास अपने मन में चिंता करने लगा कि एक कन्या, और तीन बर; किसे दूं, किसे न दूं. इसी फ़िकर में था; कि रात को एक राक्षस आन के, उस कन्या को उठाके, बिंध्याचल पर्बत के ऊपर ले गया. कहा है, कि बुहतायत किसी चीज़ की अच्छी नहीं. अति रूपवती सीता थी, रावन(१) ने हरी. राजा बल(२) ने अति दान दिया, सो दरिद्री हुआ. रावनने अति गर्व करके अपने कुलकी खेती की.

ग़रज़, जब भोर हुई, और सब घर के लोगोंने कन्या को न देखा, तब अनेक प्रकार की चिन्ता करने लगे. और यह बात वे तीनो बर भी सुन के वहां आये. उनमें एक ज्ञानी था; उस से हरिदास ने पूछा ऐ ज्ञानी। तू बता कि वह कन्या कहां गई. उसने घड़ी एक में बिचार करके कहा, तुम्हारी लड़की को राक्षस ने पर्बत में ले जाके रक्खा है. इस में दूसरा बोला कि राक्षस को मारके मैं उसे ले आऊंगा. फिर तीसरा बोला हमारे रथ पर सवार हो जाओ और उसे ले आओ. यह सुनतेही, वह झट उसके रथ पर सवार हो, वहां पहुंच, उस देव को मार, तुरन्त उसे ले आया. और तीनों आपस में झगड़ने लगे. तब उसके बाप ने मन में चिन्ता करके कहा कि सबों ने इह-सान किया है; किसे दूं, किसे न दूं.

(१) रावण. (२) बलि.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! उन तीनों में से वह कन्या किसकी स्त्री ऊई? राजा बोला वह जोरू उस की ऊई जो राक्षस को मारकर लाया. बैताल ने कहा सब का गुण बराबर है, किस तरह से वह उसकी जोरू ऊई? राजा ने कहा उन दोनों ने इहसान किया; इस से उन को सवाब हुआ. और यह लड़कर उसे मार के लाया है; इसवास्ते, वह इसकी जोरू हुई. यह बात सुन, बैताल फिर उसी दरख़्त में जा लटका. और राजा भी, वोंहीं जा, बैताल को बांध, कांधे पर रख, उसी तरह ले चला.

छठी कहानी.

फिर बैताल बोला ऐ राजा! धर्मपुर नाम एक नगर है. वहां का राजा धर्मशील. और उसके मंत्री का नाम अंधक. उसने एक दिन राजा से कहा महाराज! एक मंदिर बना, उस में देवी को बिठा, नित पूजा कीजिये कि इसका शास्त्र में बड़ा पुन्य लिखता है. तब राजा, एक मंदिर बनवा, देवी पधरा, शास्त्र की बिधि से पूजा करने लगा और बिन पूजा किये जल भी न पीता था.

इस तरह से, जब कितनी एक मुद्दत गुज़री, तो एक रोज़ दीवान ने कहा महाराज! मसल मशहूर है कि

निपूते का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, और दरिद्री का सब कुछ सूना है. यह बात सुन, राजा देवी के मंदिर में जा, हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि हे देवी! तुझे बिरह्मा,(१) बिषनू,(२) रुद्र, इंद्र आठ पहर सेवते हैं; और तू ने महिषासुर, चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज ले दैत्यों को मार, पृथ्वी का भार उतारा; और जहां जहां तेरे भक्तों को बिपत पड़ी, तहां तहां जा तू सहाय ऊई. और यही आस तक मैं तेरे द्वारे पर आया हूं. अब मेरे भी मन की इच्छा पूरी कर.

इतनी स्तुति जब राजा कर चुका, तब देवी के मंदिर से आवाज़ आई कि राजा! मैं तुझ से खुश ऊई; बर मांग जो तेरे मन में है. राजा बोला हे माता! जो तू मुझ से खुश ऊई तो मुझ को पुत्र दे. देवी ने कहा राजा! तेरे पुत्र होगा महाबली और बड़ा प्रतापी. तब तो राजा ने चंदन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य देकर पूजा की. और इसी तरह से हर रोज़ पूजा करता था. गरज़, कितने दिनों के पीछे राजा के एक लड़का पैदा ऊआ. राजा ने बाजे गाजे से कुटुंब समेत जाकर देवी की पूजा की.

इस अरसे में, एक दिन का इत्तिफ़ाक़ है; कि किसी नगर से, एक धोबी, अपने दोस्त को साथ लिये, इस शहर की तरफ़ आता था, कि देवी का मंदिर उसे नज़र आया. उसने दंडवत करने का इरादः किया. इस में एक

(१) ब्रह्मा. (२) विष्णु.